(6.) स्यात् नास्ति च अवक्तव्यम् च अर्थात् स्यात् नहीं है, और अवक्तव्य भी है। — यहाँ घड़े के संदर्भ में इस वाक्य होगा स्यात् घड़ा नहीं है और अवक्तव्य है'। इसका अर्थ यह हुआ कि एक विशेष दृष्टि से

Scanned with CamScanner

घड़ा नहीं है किन्तु दृष्टि स्पष्ट नहीं होने के कारण हम उसके विषय में कुछ कह नहीं सकते।

(7.) स्यात् अस्ति च नास्ति च अव्यक्तव्यं च

अर्थात् 'स्यात् है, नहीं है और अव्यक्त भी है'।

यहाँ घड़े के संदर्भ में सातवाँ वाक्य होगा, 'स्यात् घड़ा है, नहीं है और अव्यक्त भी है'। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी दृष्टि से घड़ा है, दूसरी दृष्टि से घड़ा नहीं है और दृष्टिकोण स्पष्ट न होने के कारण अव्यक्त भी है अर्थात् उसके विषय में हम कुछ कह नहीं सकते।

Scanned with CamScanner

समीक्षात्मक समालोचना :— जैन दार्शनिकों के अनेकान्तवाद, स्याद्वाद तथा सप्तभंगी-नय सिद्धांतों की आलोचना लगभग सभी जैनेतर दार्शनिकों ने की है। जैनों के कट्टर आलोचक वेदान्ती तो उनकी आलोचना करते ही हैं, स्वयं जैन के ही समकक्ष बौद्ध भी जैनों के इन सिद्धांतों की कड़ी आलोचना करते हैं। कोई तो इन सिद्धान्तों को 'पागलों का प्रलाप' तक कह देते हैं।

जैन दार्शनिकों को अपनी आलोचना का उन्माल पहले से ही था, इसलिए जैन दार्शनिकों ने सम्भावित आलोचना का खण्डन पहले ही कर दिया था। आलोचनाओं का प्रत्युत्तर में खण्डनात्मक पक्ष जैन दार्शनिकों का इस प्रकार से है :—

(1.) संशय दोष :— कुछ आलोचक दार्शनिक स्याद्वाद को 'संशयवाद' कहते हैं। वस्तुतः वे दार्शनिक 'स्यात्' का अर्थ 'शायद' समझ लेते हैं, इसलिए इसे संशयवाद कहते हैं।

Scanned with CamScanner